खेल खेल में शिक्षा

कोई भी काम यदि खेल भावना से किया जाए तो वह बोझिल न लगते हुए आसान हो जाता है। छोटे बालक की स्वाभाविक प्रवृत्ति खेलने की होती है यह बात ध्यान में रखते हुए खेल खेल में ही यदि कोई बात उसे समझाई जाए तो वह उसे आसानी से समझता है। बालक की शिक्षा में इसीलिए ऐसे साधन महत्वपूर्ण होते हैं जिनके साथ खेला जाए।

चित्रकारी भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम और साधन है। ये है भी रेखा, रंग और आकारों का खेल। खेल-खेल में ही आड़ी-तिरछी, टेढ़ी-मेढ़ी, सरल तथा घुमावदार रेखाओं से कई प्रकार के आकार बन जाते हैं। रंगों के छींटे और धब्बे भी तो अजीबोगरीब आकार बना लेते हैं। आसमान में बादलों के जमघट में या बिखराव में ऐसे ही आकार दिखाई देते हैं। शुरू में ये सारे बेमतलब से लगते हैं परंतु उन्हें गौर से देखते रहने पर धीरे-धीरे उनमें परिचित शक्लें उभरने लगती हैं। वास्तव में वहाँ तो होते हैं केवल धब्बे और बादलों के टुकड़े। शक्लें तो होती हैं देखने वालों के मस्तिष्क में। प्राकृतिक रूप से हर देखने वाले के अंदर मौजूद सुप्त चित्रकार उन्हें देखकर अपनी कल्पना से ये शक्लें या चित्र बनाता है। प्रकृति ने खूब सारी बातें, प्रवृत्तियाँ हमारे मस्तिष्क में दे रखी हैं। वे सारी सुप्तावस्था में होती हैं। हमारा बाहरी वातावरण, उसमें होने वाली प्रत्येक छोटी-बड़ी चीज़ उस प्रवृत्ति को जगाने, उकसाने का काम करती है। उसके उकसावे में हम किस तरह आते हैं, किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं यह निर्भर करता है हमारी संवेदनशीलता पर।

वातावरण में पाई जाने वाली बातों को देखकर, सुनकर, स्पर्श करके हमारे अंदर का सुप्त चित्रकार, गायक, नर्तक, कवि तथा वैज्ञानिक जाग उठता है और अपने अपने ढंग से प्रेरणा पाता है। सही मायने में हमारा वातावरण तथा उसकी हर चीज़ हमारी शिक्षक होती है। वह अपने कार्यकलापों से हमारी जिज्ञासा जगाती है, हमारे चिंतन तथा कल्पना को चालना देती है, हमारी संवेदन क्षमता के अनुरूप हम जो अनुभव ग्रहण करके अपना निष्कर्ष निकालते हैं वही हमारी सही शिक्षा है।

बालक केवल एक मिट्टी का लोंदा नहीं है जिसे पर हमारी इच्छा के अनुरूप कोई आकार थोपें। उसके अंदर विद्यमान प्रवृत्ति को, उसके कार्य-कलापों का सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करके उसकी संवेदनशील क्षमता को पहचान कर उसका ही विकास स्वयं वह बालक किस प्रकार कर सके ऐसा वातावरण निर्माण करके हम उसे सहयोग दें। हमारी अनावश्यक दखलंदाजी

से अवरोध निर्माण न करें यही हमारी (पालकों तथा शिक्षकों की) भूमिका होनी चाहिए।

बालक के लिए तो सारा वातावरण ही एकदम नया होता है। हर चीज़ उसे अनूठी लगती है और स्वाभाविक संवेदनशील प्रवृत्ति के कारण वह उसके प्रति आकर्षित होता है। बरसों से देखते रहने के कारण हमारी संवेदना शिथिल हो जाती है इसलिए बालक की जिज्ञासा और हरकत हमें निरर्थक जान पड़ती है, और तब उसे सहयोग देने के बजाए हम उसे रुकाने का प्रयास करते हैं।

खेल की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण खेल के दौरान ही उसे कई प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं। सुखद अनुभवों को वह दोहराता है। अपनी बात को नाचते गाते हुए कहता है। किसी वस्तु को उछालना-फेंकना, दीवार पर कुरेदना, आड़ी-तिरछी कुरेदी हुई रेखाओं से बने निशानों को देखकर उल्लसित होना उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इन हरकतों में किस प्रकार का अनुभव वह पा रहा है या किस भावना को व्यक्त कर रहा है इसकी हमें तो ठीक से कल्पना नहीं होती। हमें तो दिखाई देती है केवल बिगड़ी हुई ज़मीन और दीवारें। नज़र आती है उसकी बेमतलब की उछलकूद और बेहूदगी। ऐसी स्थिति में बजाए झल्लाने और नाराज़ होने के, निर्धारित स्थान तथा उचित सामग्री मुहैया करके इन हरकतों को सही ढंग का मोड़ भी दिया जा सकता है। आंगन में ही रेती बिछाकर जहाँ किसी टहनी से लकीरें बनाता-बिगाड़ता रहे, चाहे फर्श पर कच्चे मिट्टी के रंगों से खेलता रहे। इस प्रकार के खेल में, अनजाने में बने विभिन्न आकारों से उसका परिचय हो जाता है। भले ही वह दिखाई न दे परंतु उसके मस्तिष्क में तो अंकित हो ही जाता है। ऐसे समय में यदि हम उसे कोई विशिष्ट आकृति - जो हमारी समझ में आती हो - बनाने का आग्रह करें तो वह उसके प्रति दखलंदाजी होगी। इसके फलस्वरूप अपनी स्वयं प्रेरित मौलिकता खोकर नकल की प्रवृत्ति की शुरुआत होने की संभावना अधिक रहेगी जो उसके सही विकास में बाधक बन सकती है।

अक्षरज्ञान –

हम बोलते हैं तो ध्वनि निर्माण होता है जो सुनाई तो देती है परंतु दिखाई नहीं देती। ध्वनी की भी एक सीमा है उस सीमा तक ही उसे सुना जा सकता है, और वह भी कुछ क्षण के लिए ही। विज्ञान ने आज इस ध्वनि को टेप में रिकॉर्ड कर बांध लिया जिसे बार-बार सुना जा सकता है। एक स्थाई रूप दे दिया है।

एक पत्ता ही लीजिए। पत्ता, उसका डंठल टहनी से जुड़ा हुआ प्रत्यक्ष अ आपके सम्मुख है। चित्र के साथ अक्षर के दृष्य रूप का मेलजम गया, और अक्षर के साथ ही चित्र बनाना भी आसान हो गया। अब इसी प्रकार कुछ अलग-अलग प्रकार की पत्तियाँ और कुछ टहनियाँ एकत्रित कीजिए, उनकी सूरत-शकल, उनकी विशेषताओं को गौर से निहारते हुए उन्हें समझने का प्रयास कीजिए। बच्चों के साथ उन्हें अलग अलग तरीकों से रचाकर, उन्हें प्रोत्साहित कीजिए और देखिए कितनी सारी सामग्री आपके और बच्चों के अध्ययन के लिए मिलजाएगी।

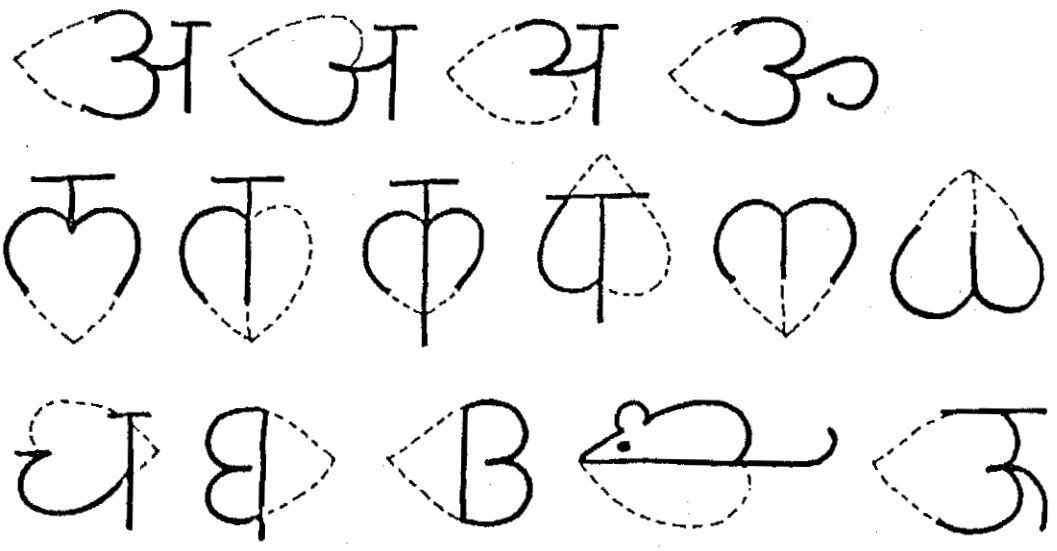

ये हुए पीपल या उसके जैसी पत्तियों से मिलने वाले आकार और उनके द्वारा बने हुए कुछ अक्षरों के नमूने। इसी प्रकार अक्षरों में पाएजाने वाले मुख्य आकार तथा उनकी विशेषताओं को समझकर अन्य पत्तियों में भी उन्हें खोजने का खेल हो सकता है।

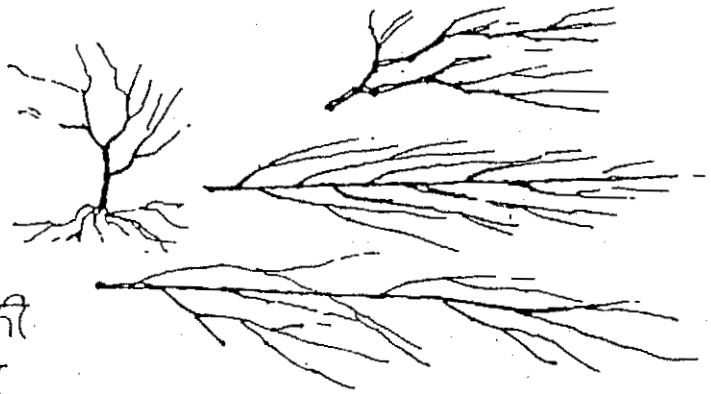

अब हम टहनियों के बारे में देखेंगे। हमारे आंगन में ही सूखे हुए पौधों को उखाड़कर तथा बगड़ की कटाई-छँटाई से काफी सारी टहनियाँ हम जुटा सकते हैं। अरहर की डंडियाँ तथा सुबबूल की

टहनियाँ अच्छी काम आ सकती हैं। इस प्रकार टहनियाँ किए जाने पर जहाँ तक हो सके समान आकार के टुकड़े काट लीजिए।

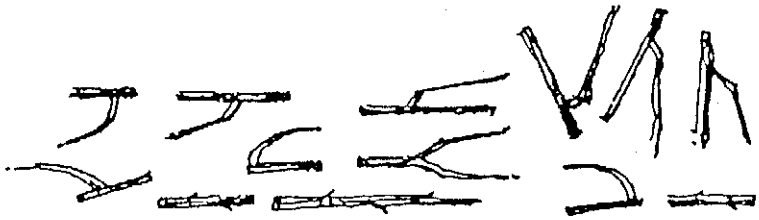

इस प्रकार विभिन्न आकार के टुकड़े खूब बना लीजिए ताकि खेलने के लिए सुविधा हो और इनकी जमावट से तरह-तरह के डिजाइन्स, चित्र तथा अक्षर बना सकें। सारे अक्षर केवल इन्हीं आकारों का प्रयोग करके बन सकते हैं। मैं कुछ नमूने प्रस्तुत करता हूँ।

इस प्रकार अलग अलग आकार के टुकड़ों की जमावट का खेल भी तथा अक्षरों का ज्ञान भी। इस खेल में अक्षरों की सही पहचान बालकों को हो सकती है तथा विशिष्ट आकारों का चयन और उसकी जगह पर योजना का अभ्यास भी हो सकता है।

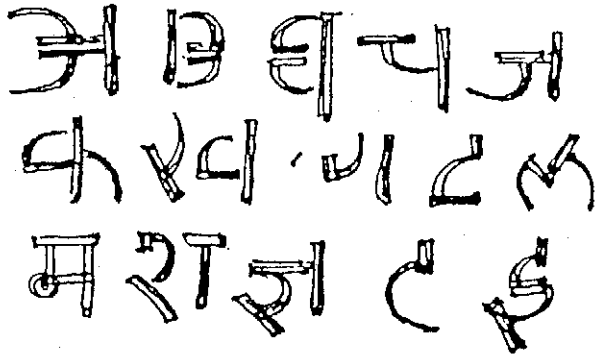

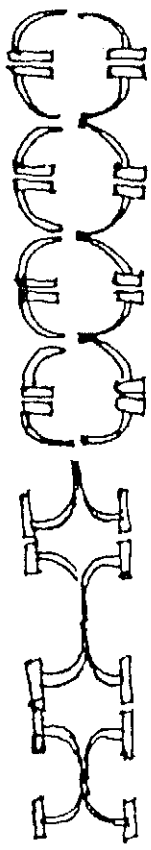

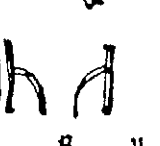

अक्षरों के अलावा जमावट से भिन्न-भिन्न डिजाइनों की भी रचना खेल-खेल में हो सकती है। जमावट के द्वारा कई प्रकार के डिजाइंस अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा बनाए जा सकते हैं। डिजाइन बनाते-बनाते अक्षर

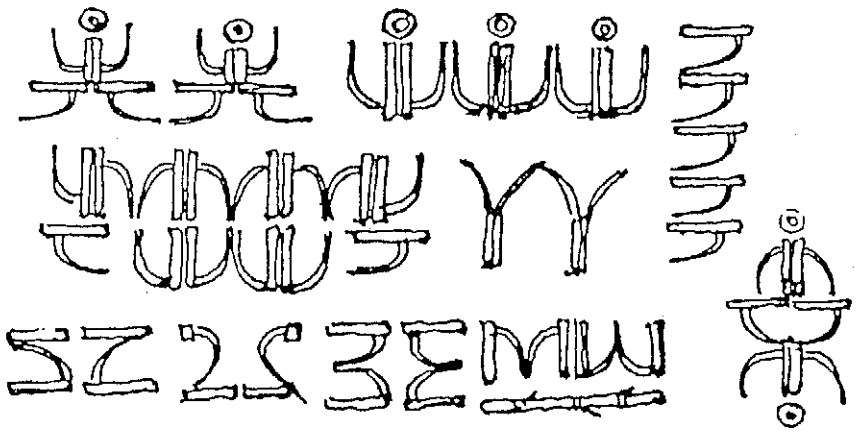

(हिंदी और अंग्रेजी के भी) बन जाते हैं तो अक्षरों की जमावट में डिजाइन। टहनियों के साथ बीज, फलियों तथा पत्तियों का प्रयोग और भी रोचक हो सकता है। इस बहाने अलग-अलग आकारों के बीज तथा फलियाँ खोजने की प्रवृत्ति का विकास होगा

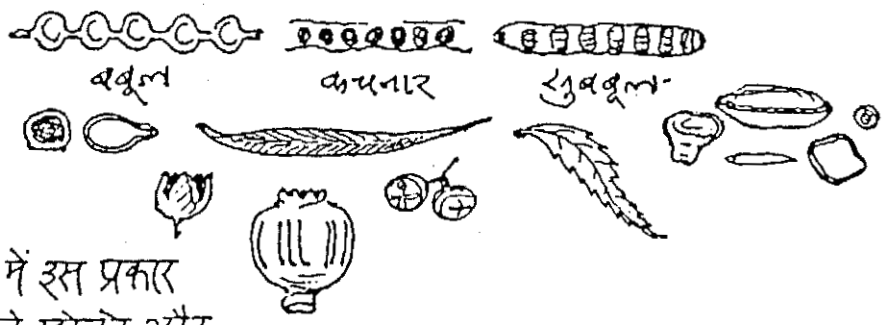

वास्तव में इस प्रकार की चीज़ों को खोजने और बटोर कर संग्रहित करने की बालकों की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, उसी को प्रोत्साहित करने में हमारा सहयोग आवश्यक है।

अक्षरों में चित्र

जब हम किसी सुनसान जगह या जंगल से गुजरते हैं और कहीं कोई कंकाल नजर आ जाता है तो वह किस पशु, पक्षी या जीव का हो सकता है इसकी हम कल्पना कर सकते हैं। केवल एक ढाँचे से पूर्ण रूप की हमें कल्पना हो जाती है। अब केवल रेखाओं से बना हुआ अक्षर भी तो लगभग एक कंकाल की ही तरह होता है। क्या उसे देखकर कभी हमने किसी प्राणी या वस्तु की कल्पना की है? जिस प्रकार पत्तियों में हमने अक्षरों को देखा उसी प्रकार अक्षरों के साथ यदि खेला जाए, मतलब उन्हें चारों ओर घुमाकर, उलट-पुलट कर उनको निहारा जाए तो उनमें छुपे हुए चित्रों को हम ढूंढकर पहचान सकते हैं।

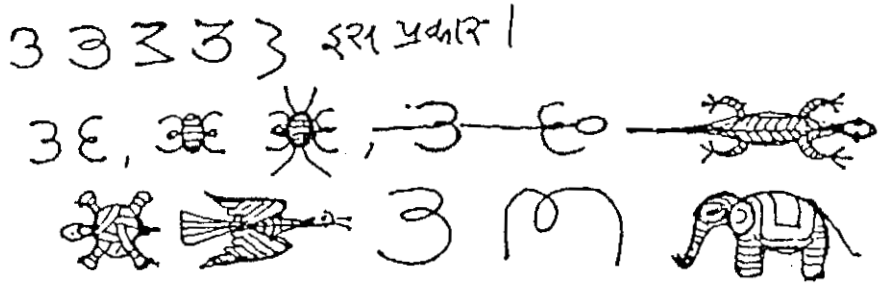

बालकों के लिए यह भी एक मनोरंजक खेल हो सकता है।

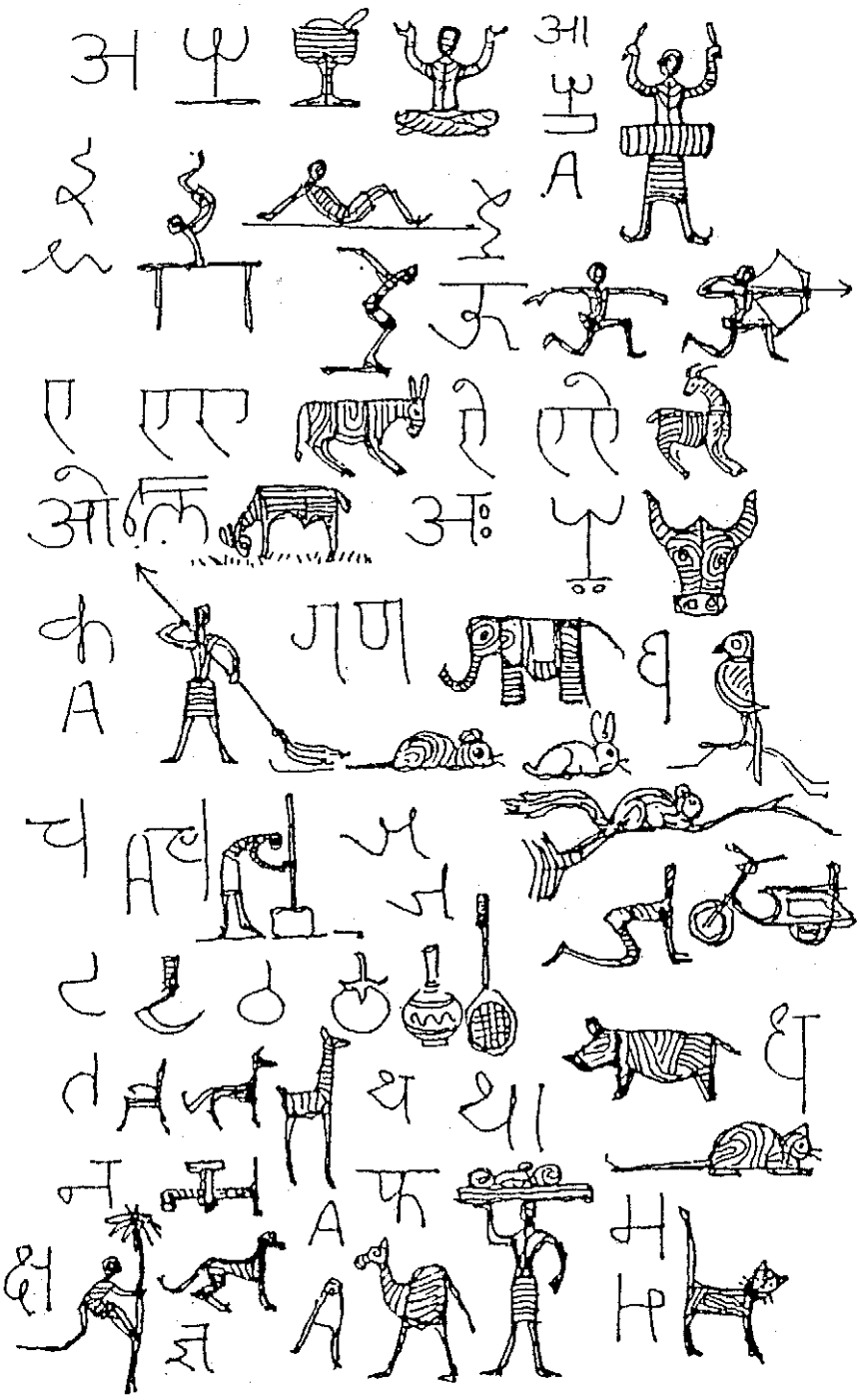

अक्षरज्ञान की शुरुआत होती है स्वरों से, याने ॐ से शुरुकरके अ, आ, इ, ई से अ: तक। इन्हें गौर से देखिए तो पता चलेगा उ यह आकार प्रमुख है। अब इसी आकार के साथ खेलाजाए। इसकी लिखावट भी भिन्न-भिन्न प्रकार की होते हुए भी स्वभाव वही बना रहता है। (देखिए पिछले पन्ने पर)।

अपने इर्दगिर्द बिखरी वस्तुओं से खिलौने –

अक्षरों में किस प्रकार चित्र दिखाई देते हैं इसके कुछ नमूने आपने देखें। परंतु ये इतने में ही सीमित नहीं हैं। आप अपनी कल्पना से, इनसे हटकर और भी अलग अलग चित्र बनाने का प्रयास करें। केवल इस बात का ध्यान रहे कि चित्र और अक्षर में सामंजस्य बना रहे। प्रत्येक अक्षर एक स्वतंत्र चित्र है। खोजने पर इनमें अपार संभावनाएँ दिखाई देंगी।

अक्षरों के अनुरूप ही अपने आंगन में और भी ऐसी वस्तुएँ हैं जिन्हें हम बेकार समझकर फेंक देते हैं। जैसे नारियल की नट्टी, आम की गुठली, मकई का भुट्टा, सिंगाड़े का छिलका वगैरा। इनसे मजेदार खिलौने बन सकते हैं। उनके कुछ नमूने प्रस्तुत हैं।

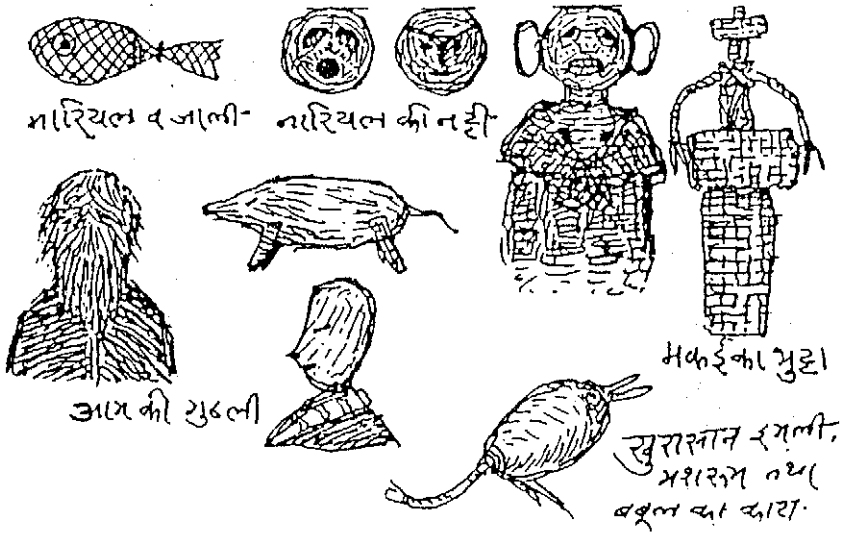

खेल-खेल में शिक्षा

विष्णु चिंचालकर